स्त्री अध्ययन विभाग म.गा.अं.हि.वि.वि. वर्धा एवं सावित्रीबाई फुले स्त्री अभ्यास केन्द्र एसएनडीटी विश्वविद्यालय, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में परिचर्चा का आयोजन 27 एवं 28 जुलाई, 2015

दिनांक 27 जुलाई, 2015 को स्त्री अध्ययन विभाग एवं सावित्रीबाई फुले स्त्री अभ्यास केन्द्र एसएनडीटी विश्वविद्यालय, पुणे के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय **"स्त्री अध्ययन : वर्तमान परिदृश्य एवं शोध की चुनौतियां"** विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सुप्रिया पाठक प्रभारी विभागाध्यक्ष ने किया।

परिचर्चा के प्रथम सत्र में डॉ. अनघा तांबे ने 'शोध प्रविधि : संभावनायें एवं चुनौतियां' विषय पर स्त्री अध्ययन तथा अन्य विभागों के शोधार्थियों के साथ चर्चा करते हुए नारीवादी शोध प्रविधि के संबंध में अत्यन्त महत्वपूर्ण विचार व्यक्त किए। नारीवादी शोध प्रविधि का उपयोग शोधार्थी किस प्रकार अपने शोध कार्य के दौरान कर सकता है एवं उसे किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इस पर उन्होंने विस्तार पूर्वक चर्चा की।

नारीवादी शोध प्रविधि के महत्त्व को रेखांकित करते हुए उन्होंने कहा कि शोधार्थी एवं उत्तरदाता के मध्य समानता का रिश्ता कायम होना चाहिए। विशेषतौर पर तथ्य संकलन के दौरान शोधार्थी को महिलाओं के व्यक्तिगत अनुभवों को ज्यादा तरजीह देनी चाहिए। शोध विषय के संबंध में चर्चा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि शोधार्थी ने शोध विषय का चयन किन आधारों पर किया इसका उल्लेख होना चाहिए। शोध का एक आवश्यक अंग होने के कारण यह जानना अत्यंत महत्वपूर्ण होता है कि शोधार्थी की अपनी सामाजिक अवस्थिति (Location) क्या है एवं उसके द्वारा चुने गये विषय का इस अवस्थिति (Location) से क्या रिश्ता है।

नारीवाद के वैचारिक आधार की चर्चा करते हुए डॉ. अनघा तांबे ने स्त्री अनुभव एवं समाज के साथ उसके तमाम व्यक्तिगत संबंधों का क्या रिश्ता बनता है और समाज में जेण्डर की सामाजिक निर्मिती किस प्रकार की जाती है, इस संबंध में भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

परिचर्चा के दूसरे सत्र में एसएनडीटी के सदस्यों ने स्त्री अध्ययन विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के अनुभवों को सुना एवं हमारे विश्वविद्यालय में आने के उद्देश्य को भी हमारे साथ साझा किया। विद्यार्थी एवं शोधार्थियों से संवाद स्थापित करते हुए भारत में स्त्री अध्ययन की वर्तमान स्थिति का जायजा लेना एवं विद्यार्थियों के स्वयं की अभिरूचि इस विषय में क्यों बनी तथा ऐसे आंकडों और तथ्यों का संग्रह करना जो हाल में हुए स्त्रीवादी विमर्श में नया आयाम जोड़ते हैं, ऐसे तमाम प्रश्नों के उद्देश्यों को जानने के लिए यह टीम हमारे विश्वविद्यालय में आई।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में शोधार्थियों से प्रश्नावली भी भरवाई गई जिसमें कई रोचक प्रश्नों पर विद्यार्थियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

इस दो दिवसीय कार्यक्रम में एसएनडीटी पुणे के सदस्यों डॉ. अनघा तांबे, सुश्री स्वाती दास, सुश्री सुरेखा भारती, सुश्री अश्लेषा तथा स्त्री अध्ययन विभाग, वर्धा के सभी संकाय सदस्य, विद्यार्थी, शोधार्थी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। इस दो दिवसीय परिचर्चा का धन्यवाद ज्ञापन विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अवन्तिका शुक्ला ने किया। यह हमारे लिए भी बौद्धिक एवं संवाद के स्तर पर अत्यंत उत्साहवर्धक एवं सफल कार्यक्रम रहा।